

०७  
 भमयेयदुठयमुत्तुभमनमेस ॥ १ ॥ ८॥ धिनि दुदुष  
 गीतं मुने निविदिठैः ॥ ५ ॥ सका ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥  
 भदि विनिमिठैः ॥ ५ ॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥  
 ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥  
 ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥  
 ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥  
 ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

८.  
 गी.  
 १५

कृति रत्नवभा ॥ ७ ॥ देवभनेमैमं भेनभद्विनिगूदः ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

०३

॥ ननु यन्नभा ॥ अथ हनमिदिपेऊभसुनेयमतेवृषा ॥०३॥  
॥ ह्येयपुद्वपकुमियसुहृमडभमुता ॥ वनदिभद्वरं  
॥ कनमपुत्रभमसुता ॥०४॥ भवतः पालिपमंडद्वचतेकि  
॥ मिरेभायभा ॥ भवतः सूतिभल्लिकेभवभवादिधुति ॥०५॥  
॥ भवेन्द्रियपुत्रमंभवेन्द्रियविदालिताभा ॥ यमकुंभव  
॥ ह्यैवनिगुंनपुत्रेकुम ॥०६॥ यदि सुसुहुतनभय

६  
गी  
१५



॥ रं सर मे व म ॥ भु क्त व ॥ ३ म वि ह्ये यं दुर भुं म त्रि के म उ त ॥ ०५ ॥  
व वि ठ उं म द्रु उं व वि ठ क्त भि व म भि उ त भा ॥ द्रु उ ठ ३ म उ ह्ये  
यं ग म भि प्लू पृ ठ वि प्लू म ॥ ०७ ॥ ह्ये ति ध म पि उ ह्ये ति भु म मः  
॥ प र म पृ उ ॥ ह्ये न ह्ये य ह्ये न ग भृ क्ति म व भृ वि प्लू उ त भा ॥ ०८ ॥  
॥ उ ति के उं उ व ह्ये न ह्ये यं मे क्तं म म म उः ॥ म द्रु क्त प उ दि  
ह्ये य म द्रु व ये प प द्रु उ ॥ ०९ ॥ पू रु तिं प रु धं मे व वि द्रु न री

ॐ वसिष्ठः ॥ विक्रं सुप्रसन्नं वसिष्ठं पूजति भक्त्यना ॥ ११ ॥

कदकरं कद्वदः ॥ पूजति मयुते ॥ प्रमथः भाषः

पुनः कद्वदः ॥ मयुते ॥ १० ॥ प्रमथः पूजति भुक्तिमुक्ति

पूजति मयुते ॥ कद्वदः मयुते भुक्तिमुक्ति निरुद्धम ॥ ११ ॥

उपपन्नमयुते मयुते कद्वदः ॥ पामयुते मयुते

दिग्भिरुद्धमयुते ॥ १२ ॥ मयुते मयुते मयुते मयुते

ठ.  
गी.  
न.

५७॥: भ०॥ भववदुभनेपिनभहुयेठिरयउ॥३८॥  
 एनेनइनिपसृत्रिकेमिदइनभइन॥ सतेभहेनयेग  
 नकइयेगेनभध॥३५॥ सतेदेवभएनउः मूहतेहउ  
 धभउ॥ उपिमाउिउरतेमइंसूतिपराय॥३७॥  
 यवइहयउकिगिइइइभुवाएइभभा॥ केइकेइइ  
 भयेगउद्विदिठउइठ॥३७॥ भभंभवेपहुउपतिपुं



परमेश्वरभा॥ विनम्रद्विपुत्रं यः पशुतिमपशुति॥ ३५  
 ममपशुतिमवश्ममवश्मिभुतभीमभा॥ नदिनभुक्त  
 द्धनं उडेयतिपरंगतिभा॥ ३७ ॥ पूरुहैवमकदालि  
 यम॥ निमचमः॥ यः पशुतिउवद्भनभकतुंमप  
 शुति॥ ३८ ॥ यदुत्तपवद्वमेकभुभनपशुति॥ उता  
 वसविभुं वृद्धमपशुतेतम॥ ३९ ॥ वनदिद्विजुं

क.  
 गी.  
 ११

इरभङ्गयभट्टयः॥ मरीरभुपिकैत्रेयनकरेतिनलिपु  
उ॥७३॥ यषभचगुंभैकुदकसंनेपलिपुडे॥ भवश्व  
भुडेदेदेउषङ्गनेपलिपुडे॥७४॥ यषभूकमयदेकः  
रङ्गुलेकभिभंरदिः॥ कङ्कुकेइउषरङ्गुपूकमयतिठ  
१३॥७५॥ केइकेइरुयेरैवभुत्रंरुनमकध॥ कुउपू  
रुतिभेकेमयेदिमुदतिउपारभा॥७५॥ उतिमीठग



०३  
 वल्ली उभके इके इल्लु निरे मेन भइये ममेष्ट यः ॥ ३ ॥ ति  
 श्रीरुगवन्नदम ॥ ति पंरुयः पूवकु भिल्लनं हन भुभ  
 भा ॥ यल्लु ह भनयः भवे पंरं भिदि भिडे गताः ॥ ० ॥ उं हन  
 भुभ मिह भुभ भठ्ठु भगताः ॥ भनै पुनै पल्यते पुलयेन  
 हृषति म ॥ ३ ॥ भभये निभद सुद्रु उभि न्नं म मृदभा ॥ भ  
 भवः भवे ह्रुत नं उते कदा उतरा ॥ ५ ॥ भवे निधु के त्रय

क.  
 गी.  
 १५

प्रत्ययः मभुवत्रियः ॥ उभं वृद्धं भद्रे निरदं वीर्यं पूर्यः पि  
 उ॥ १ ॥ मभुं वृद्धं भुमं उ॥ उ॥ १ ॥ पूरुति मभुवः ॥ निरप्रति  
 भद्रे वदे ददे ददिन भुयभा ॥ ५ ॥ उभं वृद्धं निमलं वृद्धं  
 सकभन भयभा ॥ भायभन न वप्रति ॥ नभन न न ॥ ७ ॥  
 रदिरग वृद्धं विद्वि ॥ वृद्धं भुमं भुमं वभा ॥ उत्रिवप्रति के  
 त्रय क मभुन नदिनभा ॥ १ ॥ उभं वृद्धं नं विद्वि मेदनं

भवदेदिनभा॥ पूभदलभृनिभृतिभृतिवप्रतिठर  
 उ॥ उ॥ भंडुभायिभृयति, रलः कदन्तिठर॥ हनभय  
 हृउतमः पूभदेभाययदु॥ ७॥ रलभृभृतिदुयभंड  
 ठवतिठर॥ रलः भंडुतमभृयतमः भंडुरलभृय॥ १०॥  
 भवदुग्धदेदिनूकमउपययति॥ हनेयदुदविदृष्टि  
 वदुंभदुभिदु॥ १०॥ निठः पूयतिठरभृः कदन्तिभृ

क.  
 गी  
 १७



भः भूद ॥ १८ ॥ भूत निरयतु विद्युदुत्तरा ॥ ०३ ॥ य  
पूकमेपूवतिष्ठपूभदेभेदसवम ॥ उभभूत निरयतु वि  
द्युदुत्तरा ॥ ०४ ॥ यमभदेपूवतिष्ठपूलयं यतिदुद  
ता ॥ उदे ॥ उभविदं लैक नभल दूतिपदुते ॥ ०५ ॥ ॥ १८ ॥ भिपू  
लयंगदूकमभद्रिपूरयते ॥ उषपूलीनभुभभिप्रदयेनि  
पूरयते ॥ ०५ ॥ कर्मः भूतभूतः भद्रिकं निमलं लं

गलमभुल्लेहः। यमसुनंतममः हलभा ॥००॥ महुहु  
 लुयते सुने गल्लेहलवम ॥ पूभरुभेदेउभमेरुवते  
 सुनमेवम ॥०१॥ उच्चैगसुतिमहुभुमष्टिधुतिरल्लभाः ॥  
 लपतृप्रल्लविभुनयेगसुतिउभमः ॥०२॥ नतृप्र  
 ल्लहः कतरं यमरुधूनपसृति ॥ प्रल्लहसुधरंवेतिम  
 सुवंभेतिगसुति ॥०३॥ प्रल्लनेउनडीहरीनूदीरुदमभ

क.  
 गी  
 ५.

दुवना ॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥



02

मममः त्वमायः ममुः ममलेधू मक ककुनः ॥ ४ ॥ लृधि  
य ध्रियेयीर मुलृनिरुद्ध मंमुति ॥ ५ ॥ भनवभनवैभु  
लृमुलृमिद्रिधक्यैः ॥ भवरभुपरिष्टगी ॥ ७ ॥ उीतः  
म ॥ ६ ॥ मुते ॥ ७ ॥ ५ ॥ भंमयेष्टुकिमार् ॥ ८ ॥ रुद्रियेगेनमेवते ॥  
म ॥ ७ ॥ भुमतीष्टुद्रुययकल्पते ॥ ९ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥  
ध्रुतिध्रुदभभुतभुष्टुयभुस ॥ स सुतभुसपद्रुभुमायभु

४.  
गी.  
५०

कठिकभृम॥३१॥ श्रीरुगवल्लीउभय॥ इयविठगेन  
भमउरुमेष्टयः॥॥॥ श्रीरुगवन्नयम॥ उतुचुप्रलभ  
ठः सापभमऊं पूरुगवृयभा॥ सुऊं भियभृपलं नियमुं  
वेरभवेरदिता॥०॥ ययमुं पूरुगवृयभा॥ सुऊं भियभृपलं नियमुं  
वदूविषयपूरुलः॥ ययमुं पूरुगवृयभा॥ सुऊं भियभृपलं नियमुं  
वरीनिभनधुलैके॥३॥ नऊपभमृऊवेपलहृतेनउ

नमो हि इमं भूपतिं ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ प्रलभमसु  
 समुत्तमं नृपं नृपिणम् ॥ १ ॥ अतः पदं तद्गतिं निउतुं यमि  
 नैतन्ननिवृत्तिं कुयः ॥ तमेवमसुं प्रमथं प्रपद्यते ॥ पूर  
 तिः प्रमत्तपरा ॥ २ ॥ निमन्मोहात् तमस्रमेव  
 एव विमृदिनिवृत्तकम् ॥ ३ ॥ विभक्तः भायसुः यम  
 नै नमो वसुधैव ॥ ४ ॥ पदमसुं ततः ॥ ५ ॥ न तस्य मयते भवेन

ठ.  
 गी  
 ३३



मम क्लेशपादकः॥ यद्गहननिवृत्तौ तद्गुह्यमप्यमम॥ १॥  
 भवेद्यं मे स्त्रीवल्लैकं स्त्रीवदुतः मनःतनः॥ मनःधधूनी  
 क्रियाल्लपुत्रभुनिकद्वि॥ १॥ मरीरं यत्तु प्रेति यम्  
 धृष्टमतीमरः॥ गृहीष्टं निभयति वयनं नृनिवसय  
 त॥ ५॥ मेरुं यत्तुः भवन्नम रभनेप्सु लभेयम्॥ वरिधूय  
 भनस्तु यं विमयत्रपमेव॥ ७॥ उद्गुभतं भुतं वपि उद्गु

नंय उ०० त्रिउभा॥ विभ्रए नत्र पसृति पसृति हन  
 मकषः॥०॥ यउते॥ योगिनसुने पसृतु हन वभिउभा॥  
 यउते पृउउ हने नैने पसृतु मेउमः॥०॥ यम दिउग  
 उंउले एगममयतापिलभा॥ यमुनू मभियमुने उ  
 उले विदिमभमकभा॥०३॥ गभा विममकुत नि ययपृ  
 दमे एम॥ पपृभिमेधयीः भवः मेमेहु हभ हकः॥०३॥

क  
 नी  
 उ३

मरुं वैमनरोकुव पूलिनं देहमासिउः॥ पू० पू० न  
 मभायुतः पमाभुत्रय उयिपभा॥०८॥ भवभृमदं हमि  
 मत्रिविधैभः॥३॥ भु० उिहूनमयेदनेम॥ वदेसुमवैरदमे  
 ववेदुं वेदउरुदुम विदेवरादभा॥०५॥ विभेपुमधे  
 लेक करसु करपवम॥ करः भव लिहूतनिकुटभु  
 कर उमृउ॥०॥ उउमः पमधभुटः परमदुं दमदुतः॥



येलेकइयभविमृ विरुद्रुयंमः॥०१॥यभद्रुभ  
 श्रीभद्रुभपिमे उभः॥युतेभिनेकैवमे सपूविडः  
 यमयेउभः॥०३॥येभभेभमंभ्रुदे एन डिभ्रुमयेउभभा॥  
 मभचविमृद्रु डिभंभवठवेनठराउ॥०७॥७ डिउद्रुडमं  
 मभ्रुभिमभुंभयनय॥१३॥द्रुद्रुवद्रुभद्रु ह्रुडहृ  
 सुठराउ॥३॥मीठगवद्गीउभयकारनिद्रुमेनभपाद्रु

४.  
मी.  
३५

८ मेष्टुयः ॥ १२ ॥ श्री गवतवय ॥ ति वर्यं भद्रं सु  
द्विह्वनयोगवृष्टिभुतिः ॥ नरं भद्रयष्टुभष्टुयभुपु  
स्तवभा ॥ ० ॥ वदिं भद्रमष्टुभष्टुगः सति ॥ पयुनभा ॥  
८ यष्टुयष्टुल्लेष्टुभद्रं वहीरयपलभा ॥ ३ ॥ उष्टुः कभ  
वृतिः मेष्टुभद्रं नदिभानि ॥ वृतिभद्रं नदी  
भद्रिष्टुभद्रं ॥ ३ ॥ नष्टुभद्रं नदिभानि ॥ पयुनभा

मेवम॥ गहनेन तिरुत्तमृपुत्तमभ्य दभभुगीभा॥ स॥ है  
 वीमभ्यदिभेकयनि वरूयभरीभुत्त॥ भामुयः भभ्यदं देवी  
 भतिरुत्तमिभय॥ भव॥ प॥ हुहुत्तभते लेकभिमै यवभर  
 मवय॥ है येदिभुरमः पूत्तुत्तभरं पत्तुमेमृय॥ १॥ पूव  
 त्रिंयनिवत्तिंयलननदिभुभुयः॥ नमैयं नपिमायरे  
 नभदंत्तुविदुत्त॥ १॥ नभदभपूत्तिपूत्तुल्लगदद्वनीम

५.  
 मी.  
 ५५



१॥ गपाम्भामभुतं किमवृद्धमदे। उकमा॥ ३॥ अतं  
दुधिमवधुनभुद्धनेल्यवसूयः॥ पूठवत्तृकदः  
कययल्लोडिडः॥ ७॥ कभमामिहृदधुगंमभानभ  
दन्तिडः॥ मेकदूदीहमदूदवत्तृमिहृदः॥ १०॥  
मिहृदमपरिमयंमपूलयत्तमपामिहृदः॥ कभेपठेग  
पामामत्तवदिडिनिमिहृदः॥ १०॥ अमपामसंतेइदूः

कभनेषपरायः॥१॥दंतेकभनेगुननृयेनकुभाद्वय  
ना॥७॥उमभमृभयलवृभिमं५५भनेरसभा॥७८॥भ  
भूमभपिमेठविष्टुतिभनचनभा॥७९॥दभेभमदुतःस  
३६निष्टुमापरायपि॥१॥सरेदभदंठेगीभिमूदंवलव  
क्यापी॥८०॥उष्टुठिन्नवनभिक्केतेभुभमृमेभया॥य  
कुमभृभिमेदिष्टु७८८नदिमेदिउः॥८१॥यनेकामिउ

विहृत्तु मेदलमभयः॥ प्रभक्तः कभर्तु गेधपतत्रिन  
रकेसुमे॥१॥ प्रभक्तविहृत्तुः भुवृत्तनभनभमविहृत्तुः॥ यत्  
त्रुनभयहृत्तुमेदलमभयः॥१॥ यदल्लुगं वल्लुगं  
दं कभर्तु गेधपतत्रिन॥१॥ भभक्तुपारमेदधपुद्विधत्रिहृत्तुभय  
कः॥१॥१॥ त्रुनदं विहृत्तुः क्लृप्तं भभर्तुपतत्रिनभन॥१॥ विहृत्तु  
भुवृत्तुभभक्तुनभगी॥१॥ प्रवयेनि॥१॥१॥ प्रभर्तुयेनिभभ



००  
 वभ्रष्ट लक्ष निरुद्ध नि॥ भभभ्रष्टैय केतु यत्तै यत्तु पं  
 गतिभा॥ १०॥ इति पंनर कभृमं रुंन मनभद्रनः॥ कभः नै  
 पभ्रष्ट लेके भुभ्रष्टैतु यत्तु यत्तु ॥ १०॥ तत्तै विभ्रष्टः केतु  
 यत्तु भैरु रै भ्रुक्तिनः॥ उभ्रष्टद्रनः म्रैय भ्रुतेय तिपंग  
 तिभा॥ ११॥ यः स भ्रुविणिभ्रुष्टैतु यत्तु कभक रतः॥ नभ  
 भ्रुविभ्रष्टैति नभ्रुयंन पंगतिभा॥ १२॥ उभ्रष्टैतु यत्तु

क.  
 गी  
 ३१

ॐ कटककदवभिउते ॥ सुदमभुविणनेकुंकम  
कनुमिददभि ॥ ३५ ॥ श्रीगवल्लीउभदेवभरभंपति  
येगेनभधेरुमेष्टयः ॥ ३६ ॥ बल्लनवम ॥ ३७ ॥ येमभुवि  
विमदुष्टयल्लेसूयानिउः ॥ उधंनिधुउकदपु  
मदुभदेरल्लभुमः ॥ ३८ ॥ श्रीगवल्लीउभदेवभरभंपति  
सूयदेदिनेभभुदर ॥ भदिकीरल्लभीदेवउभभी

मोडिउं स॥७॥ भद्रवत्तु पमवभुसूदूठवतिठरत॥ स  
 दूभयेयंपमयेयेयसूदूः भावमः॥७॥ यल्लुभदिक  
 दवट्टकारकंभिरल्लमः॥ पूतुत्तुगाल्लुत्तुयल्लु  
 उभमल्लनः॥ ८॥ लसभुविदिउं प्येउं पृत्तुयेउं प्ये  
 नः॥ दभुदल्लुवभंयत्तुः कभगगवल्लुत्तुः॥ ५॥ क  
 मेयत्तुः सगीरभुं दूत्तुगभमयेत्तुमः॥ भंमेयत्तुः सगीरभुं

ठ.  
 गी.  
 उउ



ॐ त्रिभुवननिम्नयना ॥ ७ ॥ सुदामभुपिभवभृद्विषिठेक  
 तिपुयः ॥ यद्भुपभुवदनेकेचं ह्यमिभस ॥ १ ॥ सु  
 यमद्वलरैगृभापप्रीतिविवचनः ॥ रभृः भिगूः भि  
 रद्वृ सुदरः भद्विकपुयः ॥ ३ ॥ कद्वभुव ॥ इधुती  
 कुकुदविमदिनः ॥ सुदररलभभृधू रुः यमेकभय  
 पूदः ॥ ७ ॥ यउयभंगतरभंप्रतिपदधिउंययता ॥ ७ ॥



नमो स भ लवभा ॥ इक स द भादिं भ स मरीरं उप (उमृडे) ॥ ० ॥  
 ननद्वेद करं व हं भं हि प्रियदि तं मयड ॥ भ ए य ह भ नं मे व  
 व द्वा यं उप (उमृडे) ॥ ० ॥ भ नः पू भ यः भे भृ हं भे न भ इ वि  
 ॥ नि गू डः ॥ ठ व भं मु मि रि ट्ट उ उ पे भ न भ भ मृ डे ॥ ० ॥ मू दू य  
 प र य उ पुं उप भु डि वि ठं न रैः ॥ म ड ल क कि णि डू कैः  
 भ द्वि कं प रि म क डे ॥ ० ॥ भ ड्ड र भ न प्र ए कं उपे द भे न मे



०१  
 वयडा॥ न्रियउउदिदपेऊंरलभंमलभपूवभा॥०५॥ भु  
 ५॥ गूदे॥ ७॥ नैयडीमयन्रियउउपः॥ परभैऊमनकुंय  
 उउभभभमदहउभा॥०७॥ दउदृमिउियमूनंदीयउउनप  
 कलि॥ मंमेकलेमपउमउमूनंभादिकंभदउभा॥३॥  
 य॥ उपूदपकरकुं० लभमिमुयपनः॥ दीयउउमपरि  
 निपूउमू॥ भभमदहउभा॥३०॥ गमेमकलेयमूनभप

ठ.  
 गी.  
 ७.

[illegible]

भाषणवेसभादिहृत्तद्वयसृजते॥ प्रसभेकमिहत्तवामसु  
 वःपुत्रगीयते॥ ७०॥ यज्ञेत्तपमिहनेमभुतिःभादि  
 सेसृजते॥ कर्मसैवतद्वयंभादिहृत्तवामसु॥ ७१॥ यमसू  
 यद्वत्तद्वयंभादिहृत्तवामसु॥ यमसू  
 द्वैतनेत्तद्वयं॥ ७२॥ श्रीगवद्गीताभसूयविकयेगेनभम  
 पुत्रमेष्टयः॥ ११२॥ यज्ञेत्तवाम॥ तिमन्त्रमभुमद्व

क.  
 गी.  
 ७०



देउदुभिष्कुभिवेदि उभा॥ दृगभृमदुधीकसथसक्केसि  
निभ्रमन॥ मूठगवनवस॥ कभृनं कद्रं उं दृमं भद्रं  
॥ कवयेविदुः भवकद्रं लहगं भूद्रं भृगं विमक ७॥ १॥  
दृष्टं देधवदि दृकं कद्रं भूद्रं नीधिमः॥ यद्रुमनउ  
पः कद्रं नहृद्रं भिद्रिमापरो॥ २॥ निम्रुयं मृजं भेउद्रं दृगं  
॥ ठगउमउभा॥ दृगेदि पुरुधदृष्टुद्रिदिठः भभ्रुकीउउः॥ ३॥

०३  
 यद्गुणनउपःकमनहृदं कदमेवउता॥ यद्गुणनंउपमु  
 यपवननिभनीधि७भा॥ ५॥ अउरुपिउकदलिभङ्ग  
 हृदकुलनिय॥ कउहनीतिभेपउनिमिउंभउभउमभा॥ ७॥  
 नियउभृउमउमःकदनेपपमुउ॥ भेदउभृपरिहग  
 भुभमःपरिकीउिउः॥ १॥ दुःपभिहृवयङ्कमकयक्के  
 मठयहृउता॥ भठवगमंउगंनैवहगदललठउ॥ ३॥

क.  
 गी.  
 ७३

[illegible]



ॐ

पद्मनिभकवदेकरात्रिनिनिरेषमे॥ भद्रुत्तुप्रेत  
निमिद्विभवेकम्॥ ०३॥ वायुनंतवकतका  
लंघ्यवागुपमा॥ विविष्टमृष्यमज्ञेयुमैवमेवउप  
पद्मभा॥ ०४॥ मरीचकद्वनेतिद्वृक्षपूराठउल्लन॥ ६  
कं  
गी० यंवदिपरीतंयपद्मिउतभृदुतयः॥ ०५॥ उईयंभडिकतु  
७७॥ रभद्रनंकवले उयः॥ पसृष्टुतशमिद्वन्नभपसृतिद

मतिः॥०॥ यभृतादसुतेठवेवमिदमभृतालिपुते॥ दहपिम  
 ॥५॥ भलेकत्रदतिननिवपुते॥०॥ सुनंष्टुयंपरिष्टुष्टिवि  
 ठकममेन॥ करं॥ करकतेति द्विविधः करमभूदः॥०॥  
 सुनंकरमकडम द्वियेवपु॥ करदः॥ भूयुतेपु॥ मभूते  
 यषवष्टु॥ १॥ ०॥ भवष्टुतेयनेकंठवमष्टुयभीक  
 उ॥ यविठं॥ यिठं॥ पु॥ सुनंभद्रिकं॥ भ॥ उ॥ भा॥ ३॥ ५॥ यषकेन

उयसुनेन न क व ॥ वसिष्ठना ॥ वेति मवेषुते च उरु म  
 मिडिभुतभा ॥ ३० ॥ य उरु वरु कभि कृ द म उ म द उ क भा ॥  
 अ उ उ य द लं स उ उ म म भा द उ भा ॥ ३१ ॥ नियतं भद्रादि उ  
 भग ग द्वे ध उः उ उ भा ॥ अ द ल प्रे ध न क र य उ उ द्वि क म  
 सु उ ॥ ३२ ॥ य उ क मे ध न क र म द द्वा र व ध नः ॥ नियते  
 लै म व रु लं उ र म म मि डि भु त भा ॥ ३३ ॥ अ न व नं रु यं दि

ठ.  
 गी.  
 ३८



भभनवेकृमधैरुधभा॥भैरुगरुतेकमयउडभभभ  
मृते॥३५॥भक्तभङ्गेनदंवादीयदृङ्गदभभनितः॥भिमृभि  
मृत्रिविकरःकडभाद्विकउमृते॥३६॥गगीकमठलधै  
प्रह्वैदिंभङ्गकेसुमिः॥ददमेकनितःकडगरुमः५  
निकीतिउः॥३७॥नयक्तःप्रहृतःभुवुःमनेनैधुतिकेल  
मः॥विधदीदीदुभृशीमकडुभभउमृते॥३८॥वमृते

०३  
 दंष्ट्रुते सुव शुभं उभिर्विपं सुभं ॥ सुभं न भवे ॥ यवकु  
 नयन सुय ॥ ३३ ॥ पूरुं विं पानि विं म क द क द ॥ य ॥  
 वं नुं मे कं मय वे डि वृद्धिः ॥ भ प उ म वि की ॥ ३० ॥ य य य म भ य  
 मं म क दं म क द म व म ॥ म य य व दू स न डि वृद्धिः ॥ भ प उ  
 म म भी ॥ ३० ॥ य यं य म वि ॥ डि य म वृ उ म म य उ ॥ म व  
 उ वि प गी उं सु वृद्धिः ॥ भ प उ म म भी ॥ ३० ॥ य य य य य य

क  
 मी  
 ७५

उभनः पूरु न्दियान्नियः ॥ येगेन हृदि मरिष्ट पृतिः भ  
 पतुभाद्विकी ॥ ३३ ॥ यय उषमकभतु नृष्ट पयउ लून ॥ पू  
 भङ्गेन लल कङ्गी पृतिः भपतु ररभी ॥ ३४ ॥ यय भप्रंरु  
 यं मेकं विधमं भम भेयम ॥ नविभाद्विमुद्रै पृतिः भप  
 उतभभी ॥ ३५ ॥ भापिद्विदनी रिदिठं म ॥ भेठरुतुष्ट ॥ य  
 हृभ म्भउयइ रुः ॥ यतुं मनिगद्वुति ॥ ३६ ॥ यउरुगैविध



भिवपरि॥मेभउपमभा॥उङ्गायेभद्विकंविष्टुमङ्गुव  
 दिपूभामभा॥३७॥विधयेन्द्रियभंयोगमृ॥उमगूभउप  
 मभा॥परि॥मेविधमिवउदूराभमिभिभिभउभा॥३८॥य  
 मनेमनवनेमभुयंमदनभाङ्गनः॥निमूलभृपूभामेङ्ग  
 उङ्गभूममहउभा॥३९॥नउमभिधविष्टुवदिविष्टुव  
 भवपनः॥महंपूदतिहृदंयदेहिःभृदिहिनुः॥४०॥

४.  
 नी.  
 ७

श्रद्धा कृत्रिय विमं मुद्र लंघपात्रप कमलि पूविठऊ  
 निभठवपूठवैनुः ॥ १० ॥ मभेदभभुपः मेयं कत्रिगत्ता  
 वमेवम सुनं विहूनभाभुठं श्रद्धं कम भठवल्भा ॥ ११ ॥  
 मेदं उलेष्टुतिदं सुद्रुयपृपलयनभा ॥ दनभीमराठ  
 वसुकाइकमभठवल्भा ॥ १२ ॥ ५धिगेवकदि लिहं वैसु  
 कमभठवल्भा ॥ पतिमदइकं कम मुद्रभृपिभठवल्भा

०३  
 भा॥ ११॥ भोगेकम् ॥ ८॥ निरुतः भमिदिंलठउनरः भकम्  
 निरुत भिदिंयव विरुतिउसुम् ॥ १५॥ यतः पूरुतिउ  
 ॥ १॥ नयेनभयभिरुतउभा॥ भकम् ॥ १॥ उभमृष्टुभिदिं वि  
 रुतिभनदः ॥ १॥ मूयन्मृष्टुविपुः परपद्मद्वयुधि  
 उता॥ भकवनिपुतं कम् उवन प्रेति कि लिधभा ॥ १॥  
 भदलं कम् केतुयभदेधभापिनदृष्टा॥ भवरभुदिदे

८०  
 मी  
 ७७



उ

सं प्रभन प्रियवत्तः ॥ ५॥ नमस्तुभ्यः भवतु  
स्तुतु विगर्भतः ॥ नैष्कर्म्यमिदं परमं भवतु मेन  
पिगस्तुति ॥ ५॥ मिदं पूजयेत्तु वस्तुतु प्रेतिनिवे  
पमे ॥ भव मे नैवकं तेन निष्कृतं भूय पर ॥ ५॥ व  
स्तुविस्तुययते एतद्वनं नियम्य ॥ मस्तुमिदं  
स्तुतु मस्तुति एतद्वनं ॥ ५॥ विविक्तमेदीलभ

०३  
 मीयउ व कृयभनमः॥ पुनयेगभरिनिहं वैरगुंमभ  
 पमिउः॥ ५३॥ सुद सुं वलंरं कभंनूयंभरिगुद  
 भा॥ विभृष्टनिमः सत्रै वरु कुययकन्यउ॥ ५४॥  
 वरुकुउः ५॥ मत्रा नमेयतिनक कृति॥ मभः मवे  
 वृकुउं मभृजिंलकउं पगभा॥ ५५॥ क कुं भन  
 लिहनाति यव वृष्टाभिउकुउः॥ कुउं भं उ कुउं

क.  
 गी.  
 ७५

CC-0 In Public Domain. Digitized by eGangotri



४  
गी.  
७७

वैवहयभयसेधूरुतिभुं नियेकृति ॥ ५७ ॥ भठवल्लेन  
केतुयनियमः मेनकम ॥ ५८ ॥ कतुं नेकुभियमेकद्विष्ट  
भुवसेपिठडा ॥ ५९ ॥ गंसाः भवकुतनेहृदमेहनतिभू  
ति ॥ हभयनवकुतनियत्रुद्वनिभयय ॥ ६० ॥ उमे  
वसारंगकुभवठवेनठगड ॥ उदूभादद्वंसात्रिभु  
नेधूधुभिमसुडभा ॥ ६१ ॥ उतिउहृनभाष्टुडंउह

मुहुरंभय॥विभसु उरु मेधे यवे सुभितवत्रु  
न॥७॥भवउहउमंहुयः स॥४॥मेपरमंवयः॥७॥  
भिमम॥५॥भित्तुडेवकुभित्तिउभा॥७॥भन्न  
ठवभसुकेभसुसमंनभभुन॥भमेवधृमिमंउ  
पूतिस्नेपियेभिम॥७॥भवयम्यरिहृष्टभमे  
कंसरं वृत्त॥७॥वदंभवययेहैमेदयिष्टभिम

五  
卅  
...



कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १० ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ ११ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १२ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १३ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १४ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १५ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १६ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १७ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १८ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ १९ ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥  
 नृ... कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥ २० ॥ कश्चिदुक्तं कश्चिदुक्तं ॥









